विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachaar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 15 | अंक: 60 | दिसंबर, 2022

मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि के संदर्भ में समारोह

12 दिसंबर, 2022 को मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि के संदर्भ में शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में तथा महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा एक विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया।

पृ. 2

कहानी-उत्सव

7 नवंबर, 2023 को विश्व हिंदी सचिवालय ने कहानी-उत्सव का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप-प्रज्वलन के साथ किया गया। शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध तथा भारतीय उच्चायोग की प्रतिनिधि के रूप में द्वितीय सचिव (हिंदी व संस्कृति), श्रीमती सुनीता पाहूजा ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

पृ. 2-3

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा हिंदी दिवस 2022

2-7 दिसंबर, 2022 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिवस के संदर्भ में 'हिंदी सप्ताह' का भव्य आयोजन किया गया। इस वार्षिक आयोजन के अंतर्गत स्वरचित कविता-पठन, आशुवाक्, नुक्कड़ नाटक, अंत्याक्षरी, पोस्टर और लघु फ़िल्म प्रतियोगिताएँ उत्साहपूर्वक संपन्न हुईं।

पृ. 3-4

ऑनलाइन पैनल चर्चा : 'हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य : यथार्थ, कल्पना एवं राजनीति'

26 नवंबर, 2022 को हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी, भारतीय राजदूतावास, हैम्बर्ग, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल, चौधरीचरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत तथा ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी के संयुक्त तत्त्वावधान में ऑनलाइन पैनल चर्चा : 'हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य : यथार्थ, कल्पना एवं राजनीति' का ज़ूम द्वारा आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जर्मनी में भारत के राजदूत महामहिम श्री हरीश पर्वथानेनी थे।

पृ. 6-7

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

22-23 दिसंबर, 2022 को आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतर्राष्ट्रीय सभागार में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 'राष्ट्र निर्माण में भाषा और साहित्य की भूमिका' पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक प्रोफ़ेसर उमापति दीक्षित थे। इसके अंतर्गत उद्घाटन-सत्र एवं समापन-सत्र के अलावा पाँच समानांतर सत्रों का आयोजन किया गया।

पृ. 8

'जयतु जयतु लंकेश' उपन्यास का लोकार्पण

11 नवंबर, 2022 को डॉ. अम्बिका प्रसाद गौड़ कृत 'जयतु जयतु लंकेश' उपन्यास का सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा ऑनलाइन लोकार्पण किया गया। उपन्यास 'जयतु जयतु लंकेश' प्रख्यात उपन्यासकार, चिंतक एवं शिक्षाविद् डॉ. अम्बिका प्रसाद गौड़ की एक कालजयी कृति है।

पृ. 10

साहित्य भूषण सम्मान समारोह

17 दिसंबर, 2022 को हंसराज कॉलिज, दिल्ली में मुंबई की हिंदी अकादमी द्वारा साहित्य भूषण सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें हल्द्वानी की साहित्यकार मीना अरोड़ा को 'साहित्य भूषण सम्मान' से विभूषित किया गया। इस समारोह में देश-विदेश के कई अन्य साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया।

पृ. 13

डॉ. मैनेजर पाण्डेय

6 नवंबर, 2022 को हिंदी में मार्क्सवादी आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक श्री मैनेजर पाण्डेय का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 23, सितंबर 1941 को बिहार प्रान्त के वर्तमान गोपालगंज जनपद के 'लोहटी' गाँव में हुआ था। आपको गम्भीर और विचारोत्तेजक आलोचनात्मक लेखन के लिए पूरे देश में जाना जाता है।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *हिंदी दिवस/भाषा-विमर्श/संगोष्ठी/वेबिनार/परिचर्चा* — *पृ. 3-10*
- *लोकार्पण* — *पृ. 10-13*
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — *पृ. 13-15*
- *श्रद्धांजलि* — *पृ. 15*
- *संपादकीय* — *पृ. 16*

ISSN 1694-2485

मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि के संदर्भ में समारोह

12 दिसंबर, 2022 को मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि के संदर्भ में शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में तथा महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा एक विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की प्रतिनिधि के रूप में द्वितीय सचिव (हिंदी व संस्कृति), श्रीमती सुनीता पाहूजा ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन के साथ किया गया।

श्री युधिष्ठिर मनबोध ने अपने संदेश में विश्व हिंदी सचिवालय को विशेष बधाई दी, जो हिंदी के उत्थान के लिए सराहनीय कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य जिन श्रेष्ठ कवियों की राष्ट्रवादी धारणा के कारण सशक्त बना है, उनमें से श्री मैथिलीशरण गुप्त अग्रणी हैं।

श्रीमती सुनीता पाहूजा ने सभागार को संबोधित करते हुए कहा - *"आज मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि के अवसर पर सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन हुआ है और ऐसी महान् विभूतियों को याद करके हम अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। युवकों को ऐसे कार्यक्रमों से जोड़कर, हम अपनी संस्कृति को अगली पीढ़ी तक ले जाते हैं।"*

विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत संदेश देते हुए कहा *"मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में हम आदर भाव के साथ*

उन्हें स्मरण कर रहे हैं। उन्होंने देश-भक्ति की भावना जगाने के साथ भारत की सबसे प्रचलित भाषा, आर्य भाषा और विश्व भाषा 'हिंदी' के आधुनिक रूप का निर्माण करने में अद्वितीय भूमिका निभाई।"

इस अवसर पर श्री हिमेश गूरापा और उनकी टोली ने *"मानस भवन में आर्यजन, जिसकी उतारें आरती"* को गीत के रूप में प्रस्तुत किया। सुश्री भावना भानुजा कालियाचेट्टी और उनकी टोली ने *"हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी"* प्रस्तुत किया। डॉ. अनीता शिवगुलाम एवं महात्मा गांधी संस्थान के विद्यार्थियों ने *"नर हो, न निराश करो मन को"* कविता प्रस्तुत की। रसिका डांस अकादमी के कलाकारों ने *"चारुचंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल थल में"* का प्रस्तुतीकरण नृत्य के माध्यम से किया। डॉ. शैलाना रामडू एवं महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों ने *"सखि, वे मुझसे कहकर जाते"* को नृत्य द्वारा प्रस्तुत किया। डॉ. वर्षारानी बिसेसर-डुलुआ और महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों ने 'साकेत' के नवम सर्ग से उद्धृत *"दोनों ओर प्रेम पलता है"* को संगीतबद्ध करके उसका सुंदर गायन किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी कलाकारों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी बिहारी एवं श्री मंदीप सहारन ने मंच-संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

कहानी-उत्सव

7 नवंबर, 2023 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा कहानी-उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप-प्रज्वलन के साथ किया गया। शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध तथा भारतीय उच्चायोग की प्रतिनिधि के रूप में द्वितीय सचिव (हिंदी व संस्कृति), श्रीमती सुनीता पाहूजा ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

मॉरीशस के अलग-अलग प्रांतों की प्राथमिक पाठशालाओं के छात्रों ने नाटकीय ढंग से कहानियाँ प्रस्तुत कीं। कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की कला अधिकारी श्रीमती सुवृत्ति बाबूराम, सुश्री वर्षारानी उजागिर एवं सुश्री तेजस्विनी गोपालुडु ने छात्रों के अभिनय को सँवारा।

श्री युधिष्ठिर मनबोध ने कहा कि "कहानी-कथन मानसिक, सामाजिक एवं भावात्मक विकास को बढ़ावा देने की एक नीति है। यह शिक्षण को स्वाभाविक और आकर्षक बनाता है। बच्चों को अधिक सीखने के लिए प्रेरित करता है। हिंदी में कहानी-उत्सव का आयोजन करके बच्चों के हिंदी ज्ञान को सशक्त किया जा रहा है।"

श्रीमती सुनीता पाहूजा ने कहा कि *"कहानी बच्चों को साहित्य की ओर आकर्षित करती है। शिक्षक कहानियों द्वारा भाषा के व्याकरणिक पहलुओं पर भी काम करा सकते हैं।"*

विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-संबोधन में कहा -*"आज सरकारी पाठशाला एवं प्राइवेट स्कूलों के छात्र आत्मविश्वास के साथ हिंदी में कहानी सुना रहे हैं। कहानी-कथन के लिए यदि हम बच्चों को बार-बार मंच प्रदान करेंगे, तो उनके मन-मस्तिष्क और चरित्र का विकास होगा, वे आनंद लेकर हिंदी के नए शब्दों और*

वाक्यों को सीखेंगे और जटिल बातों को बहुत सरलता से समझने में दक्ष हो पाएँगे।''

रेनियों रोड प्राथमिक सरकारी पाठशाला एवं पाल्मा प्राथमिक सरकारी पाठशाला की छात्राओं ने 'राजा और बंदर', पी.सी.के. आर्यन वैदिक हिंदू एडड स्कूल के छात्रों ने 'गीदड़ की चतुराई', ले नी पाठशाला के विद्यार्थियों ने 'नन्ही चिड़िया', बेचु माधु प्राथमिक सरकारी पाठशाला के छात्रों ने 'खरगोश और लोमड़ी', मोका प्राथमिक सरकारी पाठशाला के छात्रों ने 'अक्ल की दुकान', ऑर्चर्ड किड्स पाठशाला के छात्रों ने 'आसमान गिर रहा है', मोहनलाल मोहित प्राथमिक सरकारी पाठशाला के छात्रों ने 'गीदड़ और मुर्गा'

तथा कावेंदिश इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों ने 'किसान और घड़ा' कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के अंत में छात्रों तथा अध्यापकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर तथा सहायक संपादक, श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस/भाषा विमर्श/संगोष्ठी/वेबिनार/परिचर्चा

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा हिंदी दिवस 2022

2-7 दिसंबर, 2022 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिवस के संदर्भ में हिंदी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। इस वार्षिक आयोजन के अंतर्गत स्वरचित कविता-पठन, आशुवाक्, नुक्कड़ नाटक, अंत्याक्षरी, पोस्टर और लघु फ़िल्म प्रतियोगिताएँ उत्साहपूर्वक संपन्न हुईं। संस्थान के प्राध्यापकों, अधिकारियों, हिंदी प्रेमियों सहित हिंदी से जुड़े विशेष अतिथियों ने विभिन्न गतिविधियों में अपनी उपस्थिति तथा अपने विचारों से छात्र-छात्राओं का मनोबल बढ़ाया।

उद्घाटन एवं स्वरचित कविता-पाठ प्रतियोगिता

2 दिसंबर, 2022 को पौधे को जल अर्पित करते हुए हिंदी सप्ताह का औपचारिक उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रेमलाल महादेव ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. अंजलि चिंतामणि ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा - *''हिंदी सप्ताह की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि छात्रों को एक मंच मिलता है, जहाँ वे हिंदी में अपनी बात कहते हैं।''* इस अवसर पर स्वरचित कविता-पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बी.ए. से संजना जड्डु ने प्रथम पुरस्कार, लविश सिंह रघुआ ने द्वितीय पुरस्कार तथा श्रावणी बिहारी ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती कल्पना लालजी, सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा डॉ. लक्ष्मी झमन तथा संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. केवल नायक रहे। कार्यक्रम में उपस्थित भारतीय भाषा संकाय के अध्यक्ष डॉ. अपाडू ने कविता-वाचन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

आशुवाक् प्रतियोगिता

5 दिसंबर, 2022 को आशुवाक् प्रतियोगिता का आयोजन सुब्रह्मण्यम् भारती सभागार में किया गया। मुख्य अतिथि आप्रवासी घाट में शोधकर्ता के रूप में कार्यरत तथा एम.बी.सी. पर 'विरासत' कार्यक्रम की प्रस्तोता श्रीमती किरण जानकी, महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल तथा एम.जी.आई./आर.टी.आई. परिषद् के अध्यक्ष श्री प्रेमलाल महादेव ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। निर्णायक मंडल के सदस्य श्रीमती किरण जानकी, श्री गुलशन सुखलाल तथा डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी रहे। आशुवाक् प्रतियोगिता में बी.ए. की मीनाक्षी देवी दोमा, गायत्री कोलीचरण तथा महिमा गणेश को क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। दृष्टि सुकराम, रचना रामफल तथा बॉवला केली को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुए।

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता

6 दिसंबर, 2022 को भारतीय अध्ययन संकाय के प्रांगण में नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए संस्थान के महानिदेशक श्री राजकुमार रामपरताब उपस्थित थे।

अनुसंधान केंद्र की अध्यक्षा डॉ. राजरानी गोबिन, संस्कृत पीठ प्रो. जतिंद्र मोहन मिश्र तथा कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय के संस्कृति अधिकारी श्री राकेश श्रीकिसुन निर्णायक मंडल के सदस्य रहे। बी.ए. तृतीय वर्ष की टोली को प्रथम पुरस्कार और बी.ए. तृतीय वर्ष से ही अन्य टोली को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। युगम रामदीन को श्रेष्ठ लेखक, मीनाक्षी देवी दोमा को श्रेष्ठ अभिनेत्री तथा सुदर्शिनी बीटू को द्वितीय श्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

7 दिसंबर, 2022 को अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन सुब्रह्मण्यम् भारती सभागार में हुआ। मुख्य अतिथि तथा निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में संगीत अध्यापक श्री किशोर खिमिया उपस्थित थे। द्वितीय वर्ष की टोली को प्रथम पुरस्कार तथा तृतीय वर्ष की दो टोलियों को क्रमश: द्वितीय पुरस्कार तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए।

पोस्टर प्रतियोगिता

2022 की पोस्टर प्रतियोगिता विश्व-विख्यात मॉरीशसीय साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर को समर्पित रही। प्रतियोगिता में हिंदी विभाग के अतिरिक्त, संस्थान के अन्य विभागों के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी-अपनी पोस्टर जमा करवाई थीं। इस प्रतियोगिता में बी.ए. की मानसी डोयल, पूजा देबी, प्रियंका परभु और सिद्धेश्वरी वर्मा रामू पुरस्कृत हुईं।

लघु फ़िल्म प्रतियोगिता

लघु फ़िल्म प्रतियोगिता का विषय 'भारत : मेरे आसपास' रखा गया। लेखानशा दसोय, छाया सिबालक तथा केली बॉवला को क्रमिक रूप से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। छाया सिबालक को श्रेष्ठ पटकथा लेखक तथा ऋषिका जद्दू को श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। डॉ. कृष्ण कुमार झा, श्री गुलशन सुखलाल, डॉ. अंजलि चिंतामणि, डॉ. तनुजा पदारथ तथा डॉ. अरविंद बिसेसर ने उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में मंच-संचालन किया।

साभार : युवाज़, युवा हिंदी की आवाज़ - अंक 9 - दिसंबर 2022

कश्मीर में हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए पहल

13, 15 और 16 अक्टूबर, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति, श्रीनगर तथा एन.आई.टी. के सहयोग से हिंदी और भारतीय भाषाओं पर तीन दिन कार्यक्रम हुए।

कार्यक्रमों की संयोजक सुश्री नुसरीन थी। 13 अक्टूबर, 2022 को श्री अनिल जोशी तथा प्रोफ़ेसर बीना शर्मा ने कश्मीर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रमुख प्रोफ़ेसर ज़ाहिदा, प्रोफ़ेसर जुत्शी, सहायक प्रोफ़ेसर सुश्री कुरैशी और श्री मुदस्सर से भेंट की। इस अवसर पर कश्मीर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के इतिहास और वर्तमान चुनौतियों के बारे में बताया गया। पुस्तकों की उपलब्धता तथा प्रकाशन के संबंध में चर्चा हुई। विशेष रूप से हिंदी पढ़ने वालों के लिए रोज़गार की बात हुई।

15 अक्टूबर, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के सहयोग से वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति ने एन.आई.टी. में श्रीनगर के स्कूलों की हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं। कार्यक्रम में लगभग 200 विद्यार्थी उपस्थित थे। एन.आई.टी. के निदेशक श्री राकेश सहगल और जीवन बीमा निगम के श्री के. के. अग्रवाल की गरिमामयी सहभागिता रही। युवाओं का हिंदी के प्रति उत्साह देखने लायक था। हिंदी पर प्रस्तुत प्रहसन ने जहाँ हिंदी और संस्कृत को लेकर युवाओं की चिंता प्रकट की, वहीं इन भाषाओं के प्रति युवाओं के लगाव को भी दर्शाया। कार्यक्रम के पहले चरण में हिंदी-उर्दू का मुशायरा था। सुश्री शबनम, सुश्री नसरीना एवं डॉ. मुक्ति शर्मा ने हिंदी में कविताएँ पढ़ीं। डॉ. वाहिद रज़ा, डॉ. परवेज़ मानुष, डॉ. शबनम अशाई, डॉ. निगहत नज़र, श्री शौकत शहबाज़, श्री सईद अब्बास जौहर व श्री इरशाद मागामी ने उर्दू भाषा में शायरी की। इस काव्य-पाठ में श्री अनिल जोशी और प्रो. बीना शर्मा की रचनाएँ भी बहुत पसंद की गईं। इस अवसर पर कश्मीर के सांस्कृतिक विभाग की ओर से श्री फ़ारूकी भी उपस्थित थे।

16 अक्तूबर, 2022 को विभिन्न भाषाओं के विद्वानों ने अपनी भाषाओं के इतिहास, वर्तमान स्थिति और चुनौतियों के संबंध में शोध-पत्र पढ़े। डॉ. वाहिद रज़ा (काश्मीरी), प्रोफ़ेसर शेख बशीर, अहमद बशीर (गूजरी), श्री मुश्ताक हिजाज (शीना भाषा), श्री शारिम इकबाल (उर्दू भाषा), श्री मंगत सिंह जुगनु (पंजाबी), श्री राजेंद्र सिंह राजन (पंजाबी), डॉ. शबनम शौकत (हिंदी भाषा), डॉ. मुक्ति शर्मा (डोगरी), श्री ज़ुबैर कुरैशी (पहाड़ी भाषा) ने मौलिक और जानकारी से भरे शोध-पत्र प्रस्तुत किए। श्री अनिल जोशी ने अपने वक्तव्य में हिंदी और उर्दू की मूलभूत एकता और भारतीय भाषाओं के समान तत्त्वों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भाषाएँ हमारी अस्मिता हैं और कश्मीर में रोज़गार की दृष्टि से हिंदी अत्यंत सहायक हो सकती है। कश्मीर के अखबारों में कार्यक्रमों की व्यापक रूप से चर्चा हुई और दूरदर्शन में इस गोष्ठी के संबंध में समाचार प्रसारित हुए।

साभार : श्री अनिल जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

'एशियाई देशों में हिंदी और भारतीय संस्कृति' विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम

29 अक्टूबर, 2022 को प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केन्द्र तथा मानविकी एवं उदार कला संकाय, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा विश्वरंग 2022 के अंतर्गत 'एशियाई देशों में हिंदी और भारतीय संस्कृति' विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम का अंतर्राष्ट्रीय आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री संतोष चौबे ने की तथा मुख्य अतिथि जापान से पद्मश्री प्रो. तोमिओ मिज़ोकामी रहे। सिंगापुर से डॉ. संध्या सिंह, श्रीलंका से श्रीमती अतिला कोतलावल, थाईलैंड से शिखा रस्तोगी, चीन से श्री विवेकमणि त्रिपाठी, दक्षिण कोरिया से सोन यन-उ तथा दुबई से आरती गोयल विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम ज़ूम द्वारा संचालित किया गया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस व गांधी जयंती के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार

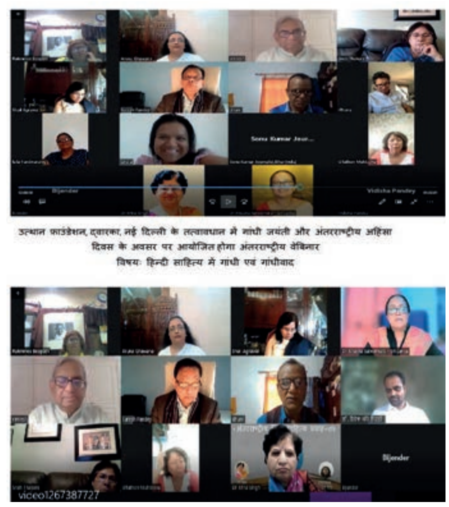

3 अक्टूबर, 2022 को उत्थान फ़ाउण्डेशन, द्वारका, नई दिल्ली द्वारा गांधी जयंती एवं अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के उपलक्ष्य में 'हिंदी साहित्य में गांधी एवं गांधीवाद' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें गांधी एवं गांधीवाद विषय पर चर्चा एवं काव्य-पाठ किया गया। वैश्विक स्तर पर गांधी और गांधीवाद की व्यापकता चीन से यूरोप और कनाडा तक दिखाई दी। प्रवासी भारतीयों के अलावा विदेशी मेहमानों ने भी इस वेबिनार में गांधी और गांधीवाद पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। भारत से इतर 15 देशों के वक्ताओं ने इस वेबिनार में भाग लिया। वेबिनार के अतिथि वक्ता प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. विमलेश कांति वर्मा सिंगापुर से जुड़े। उन्होंने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि गांधी के पदचिह्नों पर चलना विश्व के लिए ज़रूरी है। उत्थान फ़ाउण्डेशन की संचालिका श्रीमती अरुणा घवाना ने ज़ूम पर आयोजित इस वेबिनार में अहिंसा पर काव्य-प्रस्तुति दी और 'गांधी तथा हिंदी कथा साहित्य' पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। ताशकंद सरकारी प्राच्य विद्या संस्थान की हिंदी प्रोफ़ेसर उल्फ़त मुखिबोवा ने उज़्बेकिस्तान में गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री को याद करते हुए कहा कि उज़्बेकिस्तान के लोगों के लिए न तो

गांधीवाद नया है और ना ही लाल बहादुर शास्त्री उनके दिलों से दूर हैं। यू.एस.ए. से अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य प्रवाह की संस्थापक डॉ. मीरा सिंह ने गांधी जी पर कविता प्रस्तुत की।

साभार : श्रीमती अरुणा घवाना का फ़ेसबुक पृष्ठ

हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस का समावर्तन समारोह

10 दिसम्बर, 2022 को हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस की 87वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सूर्य प्रसाद मंगर भगत सभागार में एक समावर्तन समारोह का आयोजन किया गया। पंडित ईश्वरदेव जीबन मुख्य अतिथि तथा भारतीय उप-उच्चायुक्त श्री विमर्श आर्यन विशिष्ट अतिथि रहे। इलाके की सांसद श्रीमती सुभाषिणी लछमन रॉय तथा श्रीमती ज़ोआन तुर, विश्व हिंदी सचिवालय के प्रतिनिधि डॉ. सोमदत्त काशीनाथ तथा अन्य गणमान्य अतिथि कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा छठी कक्षा और प्रवेशिका परीक्षाओं में प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत किया गया। मॉरीशस में हिंदी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान देने हेतु दो महानुभावों को 'हिंदी प्रचारिणी सभा-सम्मान' से विभूषित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रों द्वारा प्रार्थना से हुई। सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने मेहमानों का स्वागत करते हुए सभा के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। मुख्य अतिथि पंडित ईश्वरदेव जीबन ने अपने भाषण में हिंदी तथा संस्कृत की महत्ता पर बल दिया। उप-उच्चायुक्त श्री विमर्श आर्यन ने हिंदी भाषा के पठन-पाठन तथा मॉरीशस में भारतीय संस्कृति पर अपने विचार दिए। उपस्थित मेहमानों ने हिंदी भाषा के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अंत में, छात्रों को प्रमाण-पत्र एवं पारितोषिक प्रदान किए गए।

श्री यंतुदेव बुधु की रिपोर्ट

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रम

9 अक्तूबर, 2022 को वैश्विक हिंदी परिवार ने 'भाषा विमर्श - भाषायी पत्रकारिता और रोज़गार के अवसर' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया।

पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली श्री आलोक मेहता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति, श्री के. जी. सुरेश उपस्थित थे। श्रीमती संगीता प्रणवेंद्र, प्रोफ़ेसर तथा भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के एसोसिएट एडिटर, श्री अनंत विजय विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम में श्री राहुल देव, वरिष्ठ पत्रकार और भाषा कर्मी का सान्निध्य रहा। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग के प्रोफ़ेसर, श्री राकेश कुमार योगी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

30 अक्तूबर, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा विश्व हिंदी सचिवालय के तत्त्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा 'भाषा विमर्श - कश्मीर में भारतीय भाषाएँ : पैनल चर्चा' वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के डॉ. राजवीर सिंह ने स्वागत-भाषण दिया।

डॉ. मोहम्मद मेहराज अहमद, विभागाध्यक्ष (संस्कृत), कश्मीर विश्वविद्यालय, डॉ. शबनम, वरिष्ठ अकादमिक अधिकारी (हिंदी,) राज्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, श्री अजीत सिंह मस्ताना, अध्यक्ष, पंजाबी साहित्य सभा, श्रीनगर, श्री सरीम इक़बाल, स्तंभ लेखक, कवि (उर्दू), बड़गाँव, कश्मीर, श्री बशीर अहमद बशीर, अध्यापक (गोजरी), शिक्षा विभाग, बड़गाँव तथा श्री राहुल देव, वरिष्ठ पत्रकार और भाषाकर्मी द्वारा पैनल चर्चा हुई।

श्री बशीर अहमद बशीर ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में बहुत सारी भाषाएँ हैं, जिनमें से गोजरी इस क्षेत्र की सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली ज़ुबान है। श्री अजीत सिंह मस्ताना ने कहा कि जिस तरह कश्मीर की सुन्दरता सारे विश्व में प्रसिद्ध है, उसी तरह यहाँ की भाषाएँ भी सुन्दर हैं। डॉ. शबनम ने कहा कि कश्मीर घाटी में आज़ादी के बाद हिंदी के प्रचार-प्रसार को व्यापक गति मिली और सरकारी सुविधाएँ प्राप्त हुईं। श्री सरीम इक़बाल ने उर्दू ज़ुबान पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में श्री अनिल जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का सान्निध्य रहा। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जवाहर कर्नावट, नसरीन अली 'निधि' (भारत) तथा डॉ. संध्या सिंह (सिंगापुर) रहे। ऑनलाइन कार्यक्रम का सुंदर संचालन बड़गाँव के कवि एवं कथाकार डॉ. वाहिद रज़ा ने किया।

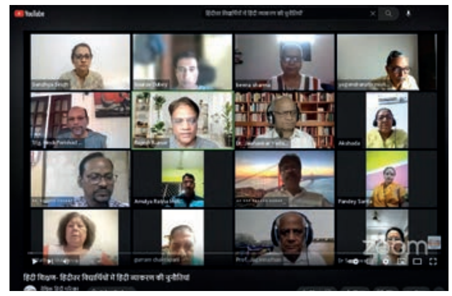

6 नवंबर, 2022 को वैश्विक हिंदी परिवार ने 'हिंदीतर विद्यार्थियों में हिंदी व्याकरण की चुनौतियाँ' विषय पर परिचर्चा का ऑनलाइन आयोजन किया। विशिष्ट वक्ताओं के रूप में प्रख्यात भाषा विज्ञानी, प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, प्रसिद्ध विद्वान, प्रो. एम. ज्ञानम तथा सरदार पटेल विद्यालय के पूर्व प्राध्यापक डॉ. योगेंद्र नाथ मिश्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम में प्रो. बीना शर्मा, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा का सान्निध्य रहा। केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. गंगाधर वानोडे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

18 दिसंबर, 2022 को वैश्विक हिंदी परिवार ने 'भाषा विमर्श - खाड़ी देशों में हिंदी : स्थिति और चुनौतियाँ' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया। आरती लोकेश, दुबई, पूर्णिमा सिंह, ओमान, मोनी विजय, कतर, आरती विमल पारीख, सऊदी अरब, शहला आक़ील खान, बहरीन तथा राधिका गुलेरी भारद्वाज, कुवैत विशिष्ट वक्ता रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जवाहर कर्नावट ने किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. संध्या सिंह, रमेश यादव, विजय मिश्र एवं संजीव सिन्हा रहे।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

'भारत के मूक प्रवासी' पर एक विशेष संवाद और अंतर्राष्ट्रीय लोकार्पण

20 नवंबर, 2022 को सान्निध्य संवाद 35, लंदन तथा संगम सिंगापुर द्वारा ज़ूम और फ़ेसबुक पर ब्रिटेन की वरिष्ठ हिंदी लेखिका कादम्बरी मेहरा की नवीनतम पुस्तक 'भारत के मूक प्रवासी' पर एक विशेष संवाद और लोकार्पण का आयोजन

Newsletter WHS Dec 2022 v 04 April 2025.indd 5 04/04/2025 19:07:42

किया गया। भारत के राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा इस वर्ष प्रकाशित इस पुस्तक की प्रस्तावना प्रसिद्ध हिंदी लेखक व दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफ़ेसर कमल किशोर गोयनका ने लिखी है। उन्होंने सत्र की अध्यक्षता की। लेखक, स्तंभकार व पूर्व बी.बी.सी. हिंदी अध्यक्ष शिवकांत ने लेखिका कादम्बरी मेहरा से उनकी पुस्तक व कृतित्व पर बातचीत की। हल्द्वानी से पं. हरीश पंत ने बुरांस के फूल पर सुप्रसिद्ध कुमाऊंनी कवि चारु चंद्र पांडे की कविता को गीत रूप में प्रस्तुत व निर्देशित किया।

कार्यक्रम की प्रस्तुति नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर की हिंदी विभागाध्यक्षा तथा संगम सिंगापुर हिंदी संस्था की संस्थापक डॉ. संध्या सिंह द्वारा की गई तथा धन्यवाद-ज्ञापन युवा कवि तिथि दानी द्वारा किया गया।

साभार : ललित मोहन जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

'स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रीय एकीकरण में हिंदी भाषा और साहित्य का योगदान' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

पहले दिवस को तीन सत्रों में विभाजित किया गया। इसमें क्रमशः उद्घाटन-सत्र, प्रथम और द्वितीय तकनीकी-सत्र शामिल थे। उद्घाटन-सत्र की शुरुआत दीप-प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अनिल जोशी उपस्थित थे। इस सत्र की अध्यक्षता जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री संजीव जैन ने की। प्रख्यात विद्वान श्री कुलदीप अग्निहोत्री और जम्मू कश्मीर विचार मंच के श्री आशुतोष भटनागर ने इस अवसर पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के संयोजक कर्मठ और प्रतिबद्ध प्रोफ़ेसर रसाल सिंह थे।

श्री अनिल जोशी ने अपने वक्तव्य में भारतीय भाषाओं में समन्वय और संवाद के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा सभी वर्गों, जातियों और धर्मों में समन्वय के लिए योगी लल्लेश्वरी व कबीर से प्रेरणा लेने की बात की। इसी सत्र में प्रोफ़ेसर रसाल सिंह की पुस्तक का लोकार्पण हुआ। गोष्ठी में प्रोफ़ेसर श्योराज सिंह बेचैन, श्री भारत भूषण अग्रवाल, प्रोफ़ेसर निरंजन, प्रोफ़ेसर रामेश्वर, प्रोफ़ेसर सुधीर प्रताप सिंह, प्रोफ़ेसर रेणु, प्रोफ़ेसर सीमा सिंह तथा श्री बृज नंदन जोशी जैसे वक्ताओं ने अपने विचार रखे। सार्थक व गहरी चर्चा ने गोष्ठी को अविस्मरणीय बना दिया।

साभार : श्री अनिल जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में विदेशी छात्रों का सांस्कृतिक कार्यक्रम

21 अक्तूबर, 2022 को केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा अटल बिहारी वाजपेयी अंतर्राष्ट्रीय सभागार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में सत्रारंभ कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। यूरोप, अफ़्रीका एवं एशियाई क्षेत्र के 14 देशों के 54 छात्रों ने केंद्रीय हिंदी संस्थान में डिग्री तथा डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया है। ये देश हैं - कज़ाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान, श्रीलंका, स्लोवाकिया, ताजिकिस्तान, नाइजीरिया, मंगोलिया, रोमानिया, चाड, थाईलैंड, माली, दक्षिण कोरिया और रूस।

कोविड महामारी के बाद इस साल अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण का सत्र शुरू होने के उपलक्ष्य में एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

मुख्य अतिथि केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यूज़ीलैंड से श्री रोहित कुमार 'हैप्पी' उपस्थित थे। इस उत्सव की कर्ताधर्ता केंद्रीय हिंदी संस्थान की निदेशक प्रोफ़ेसर बीना शर्मा रहीं।

इस अवसर पर विदेशी छात्र-छात्राओं ने हिंदी भाषा में गायन, नृत्य, भाषण इत्यादि कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इन विदेशी मेहमानों की प्रस्तुतियाँ सराहनीय एवं मनमोहक थीं। 'ए मेरे वतन के लोगो, ज़रा आँख में भर लो पानी' तथा 'ये देश रंगीला' आदि गानों को बहुत ही सराहा गया। इन छात्र-छात्राओं का नृत्य अत्यधिक प्रशंसनीय था।

साभार : श्री अरुण सिकरवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

ऑनलाइन पैनल चर्चा : 'हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य : यथार्थ, कल्पना एवं राजनीति'

26 नवंबर, 2022 को हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी, भारतीय राजदूतावास, हैम्बर्ग, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, भारत तथा ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी के संयुक्त तत्त्वावधान में ऑनलाइन पैनल चर्चा : 'हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य : यथार्थ, कल्पना एवं राजनीति' का ज़ूम द्वारा आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जर्मनी में भारत के राजदूत महामहिम श्री हरीश पर्वथानेनी थे। उन्होंने हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के भारत विद्या विभाग को आयोजन करने के लिए बधाई देते हुए कहा कि दुनिया में भारतीय संस्कृति और हिंदी का विस्तार हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह एक गलत अवधारणा है कि दक्षिण भारत के लोग हिंदी से नफ़रत करते हैं। *"वास्तविकता यह है कि दक्षिण के अनेक विश्वविद्यालयों में, संस्थानों में हिंदी का शिक्षण हो रहा है और वहाँ भी बहुत लोग हिंदी बोलते हैं। इसका सबसे ज्वलंत और अच्छा उदाहरण मैं स्वयं हूँ।"* उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि *"भारत, भारतीय समाज एवं संस्कृति को भारतीय भाषा सीखे बिना, हिंदी सीखे बिना नहीं समझा जा सकता है। यह अवधारणा कि भारत में अंग्रेज़ी से काम चल जाता है, यह ठीक नहीं। किसी भी समाज को बिना उसकी भाषा समझे*

नहीं जाना जा सकता।"

कार्यक्रम के आरम्भ में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रो. हारुनागा आइजैक्सन ने संस्कृत श्लोक के साथ सभी विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने हिंदी को संस्कृत की छोटी बहन की संज्ञा देते हुए दैनिक जीवन में हिंदी और संस्कृत के प्रयोग पर बल दिया।

परिचर्चा के मुख्य आयोजक डॉ. राम प्रसाद भट्ट ने पैनल चर्चा का संचालन शुरू करते हुए पश्चिमी देशों में हिंदी की वर्तमान स्थिति, उसके यथार्थ और हिंदी के सन्दर्भ में फैली कल्पनाओं और हिंदी के इर्द-गिर्द हो रही राजनीति पर संक्षिप्त भूमिका रखी और बताया कि यह परिचर्चा तीन किस्तों में संपन्न की जाएगी। हिंदी के यथार्थ, हिंदी की कल्पना और हिंदी की राजनीति पर पैनल चर्चा का आयोजन किया जाएगा।

श्री अनिल जोशी ने संस्थान द्वारा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला और बताया कि उत्तर पूर्व और भूटान के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान ने एक विशेष हिंदी कार्यक्रम चलाया है।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने कहा कि हमें भारतीय इतिहास की विशिष्टता के परिप्रेक्ष्य में 'राष्ट्र', 'राष्ट्र-भाषा', 'राज्य' और 'राष्ट्र राज्य' जैसे शब्दों के आशय एवं अंतर्वस्तु दोनों पर नए ढंग से सोचने की ज़रूरत है।

दैनिक जागरण के सह-संपादक एवं लेखक श्री अनंत विजय ने बताया कि वे अपने अखबार में भाषा प्रयोग के सामाजिक दायित्व के प्रति सजग हैं। उनके अनुसार भाषा के प्रवाह पर हमें भरोसा रखना चाहिए। जिस प्रकार उत्तराखंड में गंगा नदी के तट पर जल के प्रवाह में नुकीले पत्थर भी चिकने और गोल हो जाते हैं, उसी प्रकार हमें शुद्धतावादी आग्रह से बचना होगा, क्योंकि भाषा बहती हुई जल धारा के ही समान है।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कहा कि अगर किसी समाज की भाषा खतरे में पड़े और विलुप्त हो जाए, तो उस समाज का स्वत्व और स्वाभिमान दोनों खतरे में पड़ जाते हैं। उनका विचार है कि भारतीय सरकारी संस्थानों द्वारा किए जा रहे कार्य किसी साम्राज्यवादी दृष्टिकोण या अभियान का हिस्सा नहीं है।

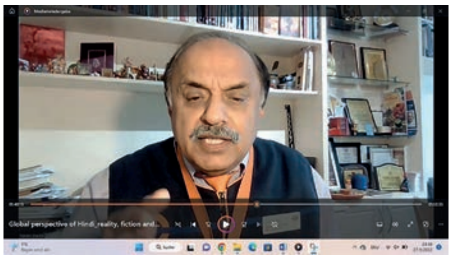

लंदन से प्रसिद्ध हिंदी लेखक एवं 'पुरवाई' पत्रिका के संपादक श्री तेजेन्द्र शर्मा ने अपने विचार उदाहरणों के साथ रखते हुए हिंदी के संदर्भ में अनेक काल्पनिक दावों पर प्रश्न उठाए और कहा कि हमें ईमानदारी से इस विषय पर विचार करना होगा कि हिंदी कहाँ है, कैसी है और उसका प्रसार कैसे हो रहा है और हम क्या बेहतर कर सकते हैं?

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व समकुलपति एवं बनारस विश्वविद्यालय के प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि हिंदी का प्रसार बढ़ रहा है। बुल्गारिया के भारतीय दूतावास में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है और वहाँ छात्र बड़े चाव से हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति, समाज और इतिहास का अध्ययन कर रहे हैं।

जे.एन.यू. के प्रो. देवेंद्र चौबे ने बताया कि वर्तमान में भारतीय विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन-पाठन की प्रक्रिया में परिवर्तन आ रहा है। संस्थानों की प्रकृति में बदलाव आ रहा है। एक तरफ़ सरकार हिंदी को बढ़ावा दे रही है, दूसरी तरफ़, जो दीर्घकालीन संस्थागत प्रयास होने चाहिए, वे घट रहे हैं। यह एक गंभीर मुद्दा है, जिसपर विचार होना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि हिंदी की बेहतरी के लिए इस तरह के अंतर्राष्ट्रीय आयोजन महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनसे संवाद की संभावना बढ़ जाती है और एक तस्वीर हमारे सामने उभरकर आ जाती है, जिसपर हम सब मिलकर कार्य कर सकते हैं। हिंदी में रोज़गार की संभावना कितनी है, उससे दुनिया के फलक पर हमारी उपस्थिति तय होती है। भारत में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं वाला रोज़गार लगातार कम होता जा रहा है। हिंदी के प्रति जो उपेक्षा भाव है, वह तभी समाप्त हो सकता है, जब हिंदी में रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे।

लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल के प्रो. शिव कुमार सिंह ने सभी वक्ताओं का परिचय प्रस्तुत किया और लोगों से अपने प्रश्न चैट रूम में भेजने का निवेदन किया। पैनल चर्चा के बाद उन्होंने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों को पैनल सदस्यों के सामने रखा। इस ऑनलाइन चर्चा में विश्व के अनेक देशों के लेखकों, विश्वविद्यालयों के विद्वानों एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

आर.के. शर्मा की रिपोर्ट, देश की आवाज़ ब्लॉग न्यूज़

'भारत - मॉरीशस संबंध : साहित्य, संस्कृति और सिनेमा' पर केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

17 दिसंबर, 2022 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला और हिंदी अध्ययनशाला के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारत - मॉरीशस संबंध : साहित्य, संस्कृति और सिनेमा' पर केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रख्यात साहित्यकार, श्री राज हीरामन थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति, प्रो अखिलेश कुमार पांडेय ने की।

इस अवसर पर मॉरीशस के प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारी, श्री ईश्वरदत्त अबाना, विक्रम विश्वविद्यालय के कला संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा, मॉरीशस के शिक्षाविद्, श्री ब्रह्मदत्त अलबाना, पर्यटन प्रबन्धक श्री सुखेन्द्र रामदास आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री राज हीरामन को 'विश्व हिंदी सेवी सम्मान' से सम्मानित किया गया।

श्री राज हीरामन ने अपने उद्बोधन में मॉरीशस के साहित्य और संस्कृति के संबंध में बताते हुए कहा कि "हमारे साहित्य में भारतीय संस्कृति है। प्रवासी लेखन भारतीय संस्कृति के बिना कुछ नहीं है। हमारे साहित्य में आज़ादी के पहले के वही कोड़े दिखेंगे, जो दो सौ साल से हमारी पीठ पर हैं। साहित्य में शोले के अंगारे दिखेंगे, आंधियों की हवा दिखेगी। साहित्य में वह नदी दिखेगी, जो विपरीत धारा में बहती है। बैठका की परंपरा के माध्यम से मॉरीशसवासियों ने अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा की। दुनिया में भारत और मॉरीशस ऐसे देश हैं, जिन्होंने उपनिवेशवाद का डटकर सामना किया और अपनी संस्कृति

Newsletter WHS Dec 2022 v 04 April 2025.indd 7 04/04/2025 19:07:44

और अपने देश का गौरव बनाए रखा। हिंदी हमारे लिए भाषा नहीं, संपूर्ण संस्कृति है। अंग्रेज़ी मैकाले की शिक्षा नीति की देन थी और आज मैकाले के देश इंग्लैंड के लोग ही संस्कृत और हिंदी सीखना चाहते हैं।"

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति, प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय ने अतिथियों का अभिनंदन किया और कहा कि मॉरीशस के लोग भारतीय संस्कृति को आज भी सहेजे हुए हैं। मॉरीशस की संस्कृति, साहित्य और प्राकृतिक सौंदर्य - सब देखने लायक हैं।

विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक, प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा ने अपने मॉरीशस प्रवास के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मॉरीशस को हम लघु भारत कहते हैं। मॉरीशस के हिंदी साहित्य में भारतीयता की सुवास व्याप्त है।

मॉरीशस के प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारी, श्री ईश्वरदत्त अबाना ने अपने उद्बोधन में कहा कि मॉरीशस में लोग रामायण का गायन करते हैं। कार्यक्रम में डॉ. सुशील शर्मा, डॉ. अजय शर्मा, श्रीमती हीना तिवारी सहित अनेक शोधार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। समारोह का संचालन डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. अजय शर्मा ने किया।

साभार : प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा का फ़ेसबुक पृष्ठ

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

22-23 दिसंबर, 2022 को आगरा के अटल बिहारी वजयेयी अंतर्राष्ट्रीय सभागार में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 'राष्ट्र निर्माण में भाषा और साहित्य की भूमिका' पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक प्रोफ़ेसर उमापति दीक्षित थे। इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन एवं समापन-सत्र के अलावा पाँच समानांतर सत्रों का आयोजन किया गया था। सांस्कृतिक संध्या के अंतर्गत एक भव्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ। इस दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के समानांतर सत्रों में भाषा, साहित्य और संस्कृति के निमित्त राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया के अनेक बिंदुओं पर गंभीर मंथन एवं चिंतन किया गया। देश–विदेश के अनेक महत्त्वपूर्ण विद्वानों ने विषय के अनुरूप अपनी चिंताओं से अवगत कराया।

23 दिसंबर को, समापन-समारोह में उत्तर प्रदेश शासन के पूर्व शिक्षा मंत्री, माननीय श्री रविंद्र शुक्ल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता के दायित्व का निर्वहन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष ने किया। समापन-सत्र में डॉ. आशीष कंधवे तथा प्रो. विनोद कुमार मिश्र विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि श्री रविंद्र शुक्ल ने कहा कि "भाषा और संस्कृति के बिना राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया संभव नहीं है। आज आवश्यक है कि हम अपनी भाषा हिंदी और समस्त भारतीय भाषाओं के प्रति कितने समर्पित हैं और उनके उत्कर्ष के लिए कितने निष्ठावान हैं, इसकी जाँच करें।" उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले कुछ वर्षों में हिंदी विश्व की नंबर एक भाषा होगी।

विशिष्ट अतिथि के रूप में सभा को संबोधित करते हुए प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी की वैश्विक चिंताओं से अवगत कराया। उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान जैसे सरकार की बड़ी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित करते हुए कहा कि वह समय दूर नहीं जब हिंदी भारतीय शिक्षण व्यवस्था की मुख्य भाषा होगी। साथ ही रोज़गार और स्वरोज़गार में भी अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर लेगी।

समापन-सत्र के विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. आशीष कंधवे ने अपने संभाषण के माध्यम से बताया कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर किसी भी प्रकार का संकट नहीं है तथा हमें अपनी भाषा, संस्कृति और साहित्य के संरक्षण के लिए अपने चौखट के भीतर सशक्त होना होगा। भाषा के साथ-साथ हमारी लिपियों का भी संरक्षण करना होगा।

22 दिसंबर की संध्या को कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के आयुष राज्यमंत्री, माननीय दयाशंकर मिश्र 'दयालु' ने मुख्य अतिथि के रूप में सांस्कृतिक संध्या एवं कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया, वहीं वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी अखिलेश मिश्र कवि सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में मंच पर उपस्थित थे। श्री अनिल शर्मा जोशी, डॉ. वशिष्ठ अनूप, डॉ. विवेक गौतम, नरेश शांडिल्य, श्रीमती अलका सिन्हा, श्रीमती जय वर्मा, श्री हर्षवर्धन, डॉ. शोभा त्रिपाठी, डॉ. प्रियंका मिश्रा एवं डॉ. आशीष कंधवे ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कवि सम्मेलन का संचालन डॉ. राहुल अवस्थी ने किया।

इसके अतिरिक्त समानांतर सत्रों में देश के अनेक गणमान्य विद्वानों ने अपने वक्तव्य से शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को लाभान्वित किया, जिनमें प्रो. पुनीत विसरिया, प्रोफ़ेसर हरीश अरोड़ा, प्रो. मनीषा शर्मा, प्रो. सुखदेव सिंह मिन्हास, डॉ. राकेश पांडे, प्रो. श्रीधर त्रिपाठी, प्रो. पंकज पाराशर, पंडित निर्लिप त्रिपाठी, प्रो. सुचित्रा त्रिपाठी, प्रो. विद्योत्तमा मिश्रा असिस्टेंट प्रो. विजय मिश्रा, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर ऐश्वर्या झा, प्रो. दर्शन पांडे, प्रो. सुशील कुमार शर्मा, सहायक आचार्य डॉ. प्रियदर्शनी, असिस्टेंट प्रो. डॉ. प्रीति सिंह आदि सम्मिलित हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के प्रत्येक भाग से हिंदी सेवी, रचनाकार और आचार्य सम्मिलित हुए थे। समापन-सत्र का संचालन कवि डॉ. राहुल अवस्थी ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन

11 अक्टूबर, 2022 को क्षितिज संस्था, इंदौर द्वारा एक दिवसीय अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दूरदर्शन के पूर्व महानिदेशक श्री राजशेखर व्यास ने की। साहित्य अकादमी भोपाल के निदेशक श्री विकास दवे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर लघुकथा की भाषा, शिल्प तथा अभिव्यक्ति पर चर्चा की गई। 23 लघुकथाओं पर श्री नंदकिशोर बर्वे एवं श्री सतीश श्रोती के निर्देशन में 'पथिक' ग्रुप के द्वारा सफल मंचन का कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर 21 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया, जिनमें क्षितिज पत्रिका का 'लघुकथा समालोचना अंक' भी शामिल रहा। कार्यक्रम में स्त्री-लेखन पर एक विशेष सत्र का आयोजन भी किया गया।

सम्मेलन में श्री भागीरथ को लघुकथा शिखर सम्मान, श्री जितेंद्र जीतू को लघुकथा समालोचना सम्मान, श्री पवन शर्मा को लघुकथा समग्र सम्मान एवं रश्मि चौधरी को लघुकथा नवलेखन सम्मान से सम्मानित किया गया। श्री विकास दवे को साहित्य भूषण सम्मान एवं श्री राजशेखर व्यास को राष्ट्र गौरव सम्मान

से अलंकृत किया गया। सर्वश्री बृजेश कानूनगो, श्री प्रदीप नवीन, श्री दिलीप जैन, चंद्रा सायता और श्री चक्रपाणि दत्त मिश्र को साहित्य रत्न सम्मान दिए गए। इनके अतिरिक्त श्री कीर्ति राणा को साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान तथा अनुराग पनवेल को मानव सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रदीप नवीन को गीत गुंजन सम्मान, डॉ. मुक्ता एवं शील कौशिक को क्षितिज एवं चरणसिंह अमी फ़ॉउंडेशन द्वारा कथा सम्मान एवं लघुकथा सम्मान से सम्मानित किया गया।

लघुकथा-पाठ के सत्र में श्री संतोष सुपेकर की अध्यक्षता और दिलीप जैन के विशेष आतिथ्य में लघुकथाकारों ने लघुकथा-पाठ किया। समस्त सत्रों के अंत में संस्था के सचिव, श्री दीपक गिरकर ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : साहित्य कुंज.नेट

काव्य-गोष्ठी एवं पुस्तक-परिचर्चा

27 अक्टूबर 2022 को बहराइच, हमजापुरा स्थित राम जानकी मंदिर में अखिल भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा एक काव्य-गोष्ठी एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया। किसान महाविद्यालय के हिंदी विभाग से जुड़े वरिष्ठ साहित्यकार श्री राधेश्याम पाण्डेय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। साहित्य भूषण श्री राम करन मिश्र सैलानी, मुख्य अतिथि तथा डॉ. वेद मित्र शुक्ल एवं गुरु प्रसाद सिंह जायसवाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित ग़ज़लकार व समालोचक, डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स ने डॉ. शुक्ल के कविता-संग्रह 'एक समंदर गहरा भीतर' पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह संग्रह हिंदी सॉनेटों का संग्रह है।

काव्य-गोष्ठी के अंतर्गत श्री विनोद कुमार पांडेय, श्री अमर सिंह विसेन, श्री वीरेश पांडेय, श्री आशुतोष, डॉ. दिनेश त्रिपाठी शम्स, डॉ. राधे श्याम पांडेय, श्री गुलाब जायसवाल, श्री रमेश चन्द्र तिवारी, श्री वेद मित्र शुक्ल व श्री विमलेश विमल ने काव्य-पाठ किया। इस अवसर पर पूर्व सहकारिता मंत्री श्री मुकुट बिहारी वर्मा तथा सांसद श्री अक्षयवरलाल गोंड, पं. राकेश कुमार दुबे, श्री कैलाश नाथ डालमिया, श्री आयुष जायसवाल, श्री बजरंग कुमार मिश्र, श्री प्रेम कुमार जालान, श्री राम गोपाल चौधरी तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभारः साहित्य कुंज.नेट

'महिला काव्य मंच' द्वारा काव्य-गोष्ठी का आयोजन

08 दिसंबर, 2022 को अमेरिका के डलस सीनियर सेंटर वर्जिन्या में 'महिला काव्य मंच' द्वारा एक काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वीना कुमार ने की। श्री सी के देसाई मुख्य अतिथि तथा श्री हरिश नवल एवं इन्दु अग्रवाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कविता-पाठ में अमेरिका के इन प्रखर रचनाकारों ने भाग लिया - श्री सी के देसाई, मधु खरे, इन्दु मेहता, वीना कुमार और इन्दु अग्रवाल। भारत की ओर से स्नेह सुधा नवल, मंजु श्रीवास्तव और श्री हरीश नवल ने अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री हरीश नवल ने कविताओं का विश्लेषण किया तथा एक व्यंग्य कथा का वाचन भी किया। कार्यक्रम का संयोजन अमेरिका से मधु खरे ने किया।

साभार : श्री हरिश नवल का फ़ेसबुक पृष्ठ

एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन

26 दिसंबर, 2022 को सॉफ़्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया, भुवनेश्वर के सौजन्य से गोठपाटणा स्थित इलीट भवन के सभागार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्रीय सरकारी कार्यालय) द्वारा एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए एसटीपीआई के निदेशक, श्री मानस रंजन पंडा ने कहा कि आज हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में हुए तकनीकी विकास हिंदी से जुड़े केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कर्मचारी को अवगत होना ज़रूरी है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री मंजेश परासर ने सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के लक्ष्यों की प्राप्ति में आनेवाली समस्याओं का समाधान करने की माँग की।

श्री रवीन्द्र कुमार दुबे ने कार्यशाला के आयोजन संबंधी राजभाषा विभाग के अनुदेशों की जानकारी दी। प्रमुख विशेषज्ञ एस.टी.पी.आई. के सलाहकार (राजभाषा), श्री हरिराम पंसारी ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से हिंदी में कंप्यूटर एवं मोबाइल फ़ोन में उपलब्ध नवीन सुविधाओं, विभिन्न इनपुट प्रणालियों, बोलकर टाइप करने, दर्ज पाठ को बोलकर सुनाने, अनुवाद करने, स्पेलिंग जाँचने, मुद्रित पाठ के इमेज को ओ.सी.आर. द्वारा टेक्स्ट में बदलने से लेकर हिंदी वर्ड-नेट, अंतर्राष्ट्रीय युनिकोड, मानकों के फोंट्स में प्रकाशन आदि की व्यावहारिक जानकारी दी। लगभग 150 कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

साभार : हिंदी मीडिया.इन

साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य मंच'

28 दिसंबर, 2022 को साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य मंच' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 3 श्रेष्ठ कहानियों का पाठ किया गया। श्री विवेक मिश्र ने अपनी मर्मस्पर्शी कहानी 'और निर्भया नहीं मिली' का पाठ किया। इसके पश्चात सोनाली मिश्र ने अपनी कहानी का पाठ किया। श्री हिरालाल राजस्थानी की कहानी 'रिवर्स गियर' माँ के साथ बच्चों की अनुभूतियों को उजागर करने का एक बड़ा अनूठा प्रयोग प्रस्तुत करती है। तीनों ही कहानियाँ स्त्री-जीवन के विविध पक्षों को उजागर करती हैं और मन में गहरे उतर जाती हैं। कार्यक्रम का संचालन श्री कुमार अनुपम ने किया।

साभार : अलका सिन्हा का फ़ेसबुक पृष्ठ

'वैश्विक साहित्य-महोत्सव' का आयोजन

09 अक्टूबर, 2022 को वैभव रिसॉर्ट, गोलकपुर में वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. रामनिवास 'मानव' के सृजन की अर्द्धशती के अवसर पर 'वैश्विक साहित्य-महोत्सव' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री, माननीय श्री ओमप्रकाश यादव ने मानव जी की साहित्यिक उपलब्धियों

पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश और समाज के प्रामाणिक यथार्थ-चित्रण के कारण उनके साहित्य को अर्द्धशती का ऐतिहासिक दस्तावेज़ कहा जा सकता है। ज़िला महेंद्रगढ़ के उपायुक्त, डॉ. जयकृष्ण आभीर, अटलबिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति, डॉ. खेमसिंह डहेरिया, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) के कुलपति, डॉ उमाशंकर यादव, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद्, नई दिल्ली और ओडिशा के पूर्व डीजीपी, श्री दिरगपाल सिंह चौहान विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

नेपाल के पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री श्री त्रिलोचन ढकाल ने डॉ. 'मानव' को अक्षय ऊर्जा और बहुआयामी प्रतिभा का धनी बताते हुए कहा कि इन्होंने अपनी रचनाधर्मिता के बल पर हिंदी-साहित्य को समृद्ध किया है। हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अवसर पर डॉ. हरमेंद्रसिंह बेदी द्वारा संपादित 'डॉ. रामनिवास 'मानव' : सृजन की अर्द्धशती' ग्रंथ सहित मॉरीशस की बहुमुखी साहित्यकार श्रीमती कल्पना लालजी की पुस्तक का लोकार्पण किया गया। नेपाल, सिंगापुर, न्यूज़ीलैंड, जापान, मॉरिशस, नॉर्वे, जर्मनी, नीदरलैंड्स, बुल्गारिया, ब्रिटेन, कनाडा तथा भारत से 50 विद्वान सम्मानित किए गए। इस अवसर पर डॉ. दीपक पांडे, डॉ नूतन पांडे तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : डॉ. नूतन पांडे का फ़ेसबुक पृष्ठ

वर्जिन्या में रचना-गोष्ठी

19 अक्टूबर, 2022 को वर्जिन्या में एक रचना गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता अमेरिका के प्रसिद्ध साहित्यकार और मीडियाकर्मी, श्री गुलशन 'मधुर' ने की। प्रख्यात लेखिका, वीणा विज 'उदित' और अन्नदा पाटनी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम का शुभारंभ नवोदित युवा कवि, श्री अनुरोध अग्रवाल की तीन छोटी उत्कृष्ट कविताओं से हुई। श्री दिनेश वर्मा ने चंद शेर और श्री अरुण अग्रवाल ने दो कविताएँ पढ़ीं। इस अवसर पर वीणा विज उदित की संस्मरण पुस्तक 'छुट-पुट अफ़साने' का लोकार्पण भी किया गया। समारोह में श्री 'माथुर साहब' ने मलिका पुखराज का गीत 'अभी तो मैं जवान हूँ' प्रस्तुत किया। श्री हरीश नवल, आस्था नवल, श्री ललित ग्रोवर, स्नेह सुधा नवल, श्री राज ग्रोवर, इन्दु ग्रोवर, शोभा क्वत्रा, गीतिका चौधरी, सविता अग्रवाल, श्रीमती वर्मा, डॉ. कोंपल, श्री पराग पाटनी, शिल्पी पाटनी, रूपल वर्मा, श्री नितिन वर्मा आदि अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

साभार : श्री हरीश नवल का फ़ेसबुक पृष्ठ

वैश्विक संगोष्ठी-133 - 'दो देश दो कहानियाँ'

26 नवंबर, 2022 को वैश्विक साहित्यिक-सांस्कृतिक मंच 'वातायन यू-के' के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार तथा हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा के सहयोग से एक ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की गयी। इस संगोष्ठी का उद्देश्य विश्व के किन्हीं दो देशों के हिंदी कथाकारों के कहानी-पाठ को इस मंच पर प्रस्तुत करना है। कार्यक्रम के अंतर्गत, ऑस्ट्रेलिया की कहानीकार रेखा राजवंशी और भारत के कहानीकार श्री विमल चंद्र पांडेय ने अपनी-अपनी कहानियों का पाठ किया, जबकि मंच की अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार सूर्यबाला ने उनकी समीक्षा की।

रेखा राजवंशी ने अपनी कहानी 'चंदा मामा दूर के' तथा श्री विमल चंद्र पाण्डेय ने 'पर्स' कहानी का पाठ किया। अपने समीक्षात्मक वक्तव्य में प्रतिष्ठित आलोचक सूर्यबाला बताती हैं कि "दोनों कहानियों में एक भी शब्द अतिरिक्त नहीं है। विशेषण भी नहीं है और कहानी में ऐसा ही होना चाहिए।'' उन्होंने ने कहा कि 'पर्स' एक पटकथा-विहीन व्यंग्यात्मक कहानी है। रेखा राजवंशी की कहानी पर अपनी टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि कहानीकार ने कल्पना और अनूठेपन को स्थान दिया है, जिससे कहानी निखर गई है। मंच-संचालन हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा की सह-संस्थापिका और सुप्रसिद्ध लेखिका शैलजा सक्सेना ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

लोकार्पण

'जयतु जयतु लंकेश' उपन्यास का लोकार्पण

11 नवंबर, 2022 को डॉ. अम्बिका प्रसाद गौड़ कृत 'जयतु जयतु लंकेश' उपन्यास का सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा ऑनलाइन लोकार्पण किया गया। उपन्यास 'जयतु जयतु लंकेश' प्रख्यात उपन्यासकार, चिंतक एवं शिक्षाविद् डॉ. अम्बिका प्रसाद गौड़ की एक कालजयी कृति है। इस उपन्यास ने पौराणिक विमर्श को एक नया आयाम दिया है। यह उपन्यास रावण के चरित्र के कई पहलुओं पर पुनर्विचार करने को प्रेरित करता है। इस उपन्यास से यह संदेश मिलता है कि रावण की बुराइयों को देखते हुए, उसकी महानता एवं अन्य गुणों को भी ग्राह्य बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में डॉ. अत्रि भरद्वाज, डॉ. राजीव श्रीवास्तव, प्रो. श्रद्धानंद, डॉ. देवेंद्र कुमार सिंह, डॉ. विदुषी आमेटा तथा प्रतिभा विश्वकर्मा अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर अतिथियों ने लेखक तथा उपन्यास के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : सर्व भाषा ट्रस्ट का फ़ेसबुक पृष्ठ

'रेड वाइन ज़िंदगी' का लोकार्पण

19 नवंबर, 2022 को लेखिका निर्मल जसवाल के उपन्यास 'रेड वाइन ज़िंदगी' का लोकार्पण हुआ। इस कार्यक्रम को अंतर्मन और हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा द्वारा आयोजित किया गया था। लगभग 65 से ऊपर साहित्य प्रेमी की उपस्थिति और प्रबुद्ध वक्ताओं की सुंदर, सशक्त चर्चाओं के बीच इस उपन्यास का स्वागत किया

Newsletter WHS Dec 2022 v 04 April 2025.indd 10
04/04/2025 19:07:45

गया। हिंदी राइटर्स गिल्ड के निदेशक मंडल से श्री विजय विक्रांत, संस्थापक निदेशक, कांता विक्रांत, डॉ. शैलजा सक्सेना, पूनम चंद्रा 'मनु', सन्दीप कुमार और डॉ. नरेंद्र ग्रोवर अन्य सदस्यों के साथ उपस्थित थे। विद्वान वक्ताओं ने उपन्यास की कथावस्तु का विश्लेषण करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए और सभी ने उनके भाव और संवेदना के आवेग को संभालने वाली सधी भाषा को सराहा।

इस कार्यक्रम का सुंदर संचालन डॉ. नरेंद्र ग्रोवर ने किया। पहले सत्र में उपन्यास पर चर्चा करने वालों में भारत से आए विद्वान भी थे। पंजाबी के समीक्षकों में चंडीगढ़ से आई परविंदर सोनी ने चर्चा प्रारंभ की और डॉ. कैलाश अहलूवालिया, कुलविंदर एस खैरा, जतिंदर रंधावा और पियारा सिंह ने उपन्यास की कथा का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए समीक्षाएँ प्रस्तुत कीं। मेजर नागरा ने अपनी संस्था 'अंतर्मन' की ओर से सबका आभार व्यक्त किया। हिंदी राइटर्स गिल्ड के समीक्षकों में डॉ. बन्दिता सिन्हा और डॉ. शैलजा सक्सेना ने अपने विचार व्यक्त किए। उसके बाद लेखिका डॉ. निर्मल जसवाल ने अपनी रचना प्रक्रिया पर संक्षिप्त बात करते हुए सभी समीक्षकों का धन्यवाद किया।

दूसरे सत्र का संचालन श्री सन्दीप कुमार ने किया और इस सत्र में हिंदी राइटर्स गिल्ड से जुड़ने वाले नए-पुराने सदस्यों के साथ पंजाबी के कुछ लेखकों ने भी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इस कार्यक्रम में भारत से आए प्रसिद्ध हास्य कवि मनजीत सिंह, वरिष्ठ पत्रकार शंभुनाथ शुक्ल, टोरंटो के पत्रकार राकेश तिवारी और आचार्य सन्दीप त्यागी उपस्थित थे। वरिष्ठ सदस्या स्नेह सिंघवी और श्री सिंघवी भी कार्यक्रम में आए। पंजाबी के अनेक लेखकों और पत्रकारों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा का फ़ेसबुक पृष्ठ

डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष की पुस्तक 'हिंदुत्व : एक विमर्श' का विमोचन

26 दिसंबर, 2022 को एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में कवि, आलोचक एवं संपादक डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष की पुस्तक 'हिंदुत्व : एक विमर्श' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी एवं पांचजन्य के संपादक श्री हितेश शंकर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान के अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद, डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने की।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने कहा कि "विश्व शांति के लिए हिन्दुत्व बेहद ज़रूरी है। वेदों में जिस एकत्व की बात कही गई है, उसे सामाजिक जीवन में महसूस किया जा सकता है।" भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी ने कहा कि डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष की पुस्तक 'हिन्दुत्व : एक विमर्श' भारतबोध का पर्याय है।

पांचजन्य के संपादक श्री हितेश शंकर ने कहा कि इस पुस्तक में पहले हिन्दुत्व, फिर भारत, भारतबोध और अंत में संस्कृति और स्वाधीनता की बात की गई है, जो आज़ादी के अमृतकाल में हम सभी के लिए मार्गदर्शक होगी। श्री शंकर ने पुस्तक को साहित्य से अकादमिक जगत की ओर ले जाने की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पत्रकारों, लेखकों एवं साहित्यकारों ने भाग लिया। समारोह का संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय में वरिष्ठ आचार्या, प्रो. कुमुद शर्मा ने किया।

साभार : हिंदीमीडिया.इन

हिंदी कल्चर सेंटर टोक्यो द्वारा आयोजित लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह

10 दिसंबर, 2022 को हिंदी भवन, नई दिल्ली में जापान की सुप्रसिद्ध संस्था हिंदी कल्चर सेंटर टोक्यो द्वारा आयोजित समारोह में हिंदी पत्रिका 'हिंदी की गूंज' एवं रमा शर्मा की पुस्तक 'आतप जीवनम्' और 'मुरझाते फूल' का लोकार्पण संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता देश के सुप्रसिद्ध कवि पद्मश्री डॉ. सुनील जोगी ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. आशीष कंधवे रहे तथा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति नियर के निदेशक, श्री इंद्रजीत शर्मा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष, श्री नवीन चंद्र लोहनी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

लोकार्पण समारोह के पश्चात् अनेक गणमान्य लोगों को सम्मानित किया गया, जिनमें मॉस्को से प्रवासी साहित्यकार, श्वेता सिंह उमा, श्री ओमकार नाथ त्रिपाठी, श्री मुकेश सिन्हा, श्री ओम प्रकाश प्रजापति, कवयित्री सुश्री कोमल एवं श्रीमती ज्योति जुल्का आदि प्रमुख थे।

डॉ. आशीष कंधवे ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि "आज हिंदी की गूंज वैश्विक स्तर पर खूब सुनाई दे रही है, परंतु चिंता का विषय यह है कि हिंदी हमारी चौखट के भीतर कितनी है, हमारे घरों में कितनी है, हमारे कार्यालय में कितनी है और हमारे हृदय में कितनी है? यह आवश्यक है कि इन प्रकाशित होने वाली पुस्तकों को पढ़ने वाले लोग भी समाज में उतनी ही जागरूकता और रुचि दिखाएँ जितना लिखने वाले लोग दिखा रहे हैं। प्रवासी साहित्यकारों को भी यह संदेश देने की कोशिश की गई है कि प्रवासी होना ही रचनाकार होने का मापदंड नहीं है, बल्कि रचनात्मक अनुशासन और उसकी गुणवत्ता को भी ध्यान में रखना होगा।"

इस आयोजन में कई गणमान्य उपस्थित थे तथा संचालन श्री विनोद पांडे ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

पुस्तक 'अतीत की अनुगूँज' का विमोचन

17 दिसंबर, 2022 को वातायन-यूके वैश्विक संगोष्ठी श्रृंखला के अंतर्गत लन्दन की लेखिका कादंबरी मेहरा की पुस्तक 'अतीत की अनुगूँज' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. नंदिता साहू द्वारा 'निर्माणों के पावन युग में' गीत से हुआ। संगोष्ठी की अध्यक्ष डॉ. नासिरा

शर्मा ने कहा कि कादंबरी जी की पुस्तक में उनके अतीत की गूंज है तथा उनके ज़ेहन के जज़्बातों की गूंज है। लेखिका डॉ. प्रभा मिश्रा ने कहा कि 'अतीत की अनुगूँज' कादंबरी जी की जीवन-यात्रा का वृत्तांत है। इस पुस्तक में ब्रिटेन में माता-पिता के अलगाव के कारण बच्चों की परवरिश पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों, रंगभेद की गंभीर समस्याओं आदि का विश्लेषण किया गया है। इन सभी संस्मरणों के छोटे-छोटे शीर्षक अत्यंत आकर्षक हैं। यह पुस्तक कादंबरी जी के सकारात्मक चिंतन, स्वस्थ और मनोरंजक तथा शिक्षावर्धक पक्ष को बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत करती है।

लेखिका नीलांजला किशोर ने अपने वक्तव्य में बताया कि कादंबरी जी की पुस्तक हर बार हमें चौंका देती है। उन्होंने कहा कि चीन-जापान के बारे में जो संस्मरण हैं, उनमें भारत की ही झलक पाते हैं। इस संस्मरण पुस्तक से स्पष्ट है कि कादंबरी जी कहीं की भी यात्रा करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेती रही हैं कि उन्हें क्या देखना है और किन-किन जगहों पर जाना है। श्री ललित मोहन जोशी ने कहा कि कादंबरी जी का लेखन पूर्णतया स्वांत: सुखाय नहीं है। उन्होंने यह संस्मरण पुस्तक अपने सतत चिंतन के सिलसिलेवार अर्थयुक्त सुनिश्चित उद्देश्य से लिखा है। यह उनकी कल्पना की उड़ान का सुनिश्चित कथ्य है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय (मानव संसाधन मंत्रालय) के सहायक निदेशक, डॉ. नूतन पांडे ने बताया कि समकाल में लिखे जा रहे संस्मरण अपेक्षाकृत वैविध्यपूर्ण हो गए हैं। कादंबरी जी की इस पुस्तक में उनके छात्रों की स्मृतियों को आज भी जीवित रखा गया है। धन्यवाद-ज्ञापन श्री मनोज मोक्षेंद्र तथा मंच-संचालन आस्था देव ने किया।

साभार: वी विट्नस न्यूज़.कॉम

'भूले बिसरे फ़िल्म संगीत सितारे' का विमोचन

10 दिसंबर, 2022 को वातायन-यूके संगोष्ठी में रघुनन्दन शर्मा 'तुषार' की पुस्तक 'भूले बिसरे फ़िल्म संगीत सितारे' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रवासी कथाकार श्री तेजेन्द्र शर्मा ने की। नवोदित साहित्यकार आस्था देव ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि यह पुस्तक हिंदी फ़िल्म जगत् के बीते दिनों के गीतकारों और संगीतकारों का सुन्दर लेखा-जोखा है।

श्री रघुनन्दन ने बताया कि ऐसे अमर गीतों के गीतकारों और संगीतकारों के बारे में इस पुस्तक में विवरण दिया गया है, जो आज भी संगीत-प्रेमियों द्वारा गाए जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि पुरानी फ़िल्मों के एक-एक गीत का शब्द-संयोजन करने और उसे संगीतबद्ध करने में कई महीने लग जाते थे। इस अवसर पर पुस्तक के प्रकाशक श्री अरुण माहेश्वरी ने पुस्तक और लेखक के बारे में अपने उद्गार व्यक्त किए। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. संध्या सिंह तथा संचालन आस्था देव ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

काव्य-संग्रह 'इंद्रधनुष' का लोकार्पण और काव्य-गोष्ठी

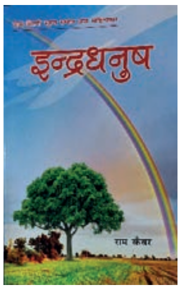

11 दिसंबर, 2022 को आइडियल एजुकेशनल, कल्चरल एण्ड वेलफ़ेयर सोसाइटी के तत्त्वावधान में श्री राम कँवर वर्मा के काव्य-संग्रह 'इंद्रधनुष' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. असीम आनंद द्वारा सरस्वती-वंदना से हुआ। संगोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार, नाट्यकर्मी तथा बेगूसराय नाट्य विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अनिल पतंग ने की। प्रथम सत्र में श्री राम कँवर की पुस्तक पर चर्चा की गई। डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र ने विमोचित पुस्तक में संगृहीत कविताओं पर चर्चा करते हुए कहा कि राम कँवर की सभी कविताएँ छांदिक अनुशासनों से आबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि यद्यपि कँवर जी ने काव्य-सृजन अपनी प्रौढ़ावस्था में शुरू किया है, तथापि उनकी कविताओं में परिपक्वता है। जगदीश शरण राजवंशी कॉलिज, मेरठ की उप-प्रधानाचार्य रेशमा देवी ने राम कँवर जी के साथ अपने आत्मीय संबंधों की चर्चा करते हुए बताया कि वे जितने अच्छे कवि हैं, उतने ही अच्छे व्यक्ति भी हैं। आगरा के अर्चना आनंद ने कँवर जी के व्यक्तित्व और रचना-कर्म पर प्रकाश डाला। 'परिंदे' पत्रिका के संपादक श्री ठाकुर प्रसाद चौबे ने संग्रह से कुछ कविताओं का पाठ किया।

दूसरे सत्र में काव्य-पाठ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र ने अपनी तीन गज़लें सुनाई। तत्पश्चात् वरिष्ठ लघुकथाकार सुरेंद्र कुमार अरोड़ा ने अपनी एक कविता के साथ-साथ एक लघुकथा का भी पाठ किया। श्री विनय विक्रम सिंह ने दो गीत सुनाए, डॉ. असीम आनंद ने संगीत-संगत में स्वरचित पैरोडी सुनाई, जबकि कँवर जी ने अपनी पुस्तक से ही दो आदर्शवादी रचनाओं का पाठ किया। अंत में, श्री राम कँवर वर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. असीम आनंद ने किया।

साभार : वी विट्नस न्यूज़.कॉम

साहित्य समारोह एवं पुस्तक-लोकार्पण

10 दिसंबर, 2022 को गेयटी के विशाल एमपी हॉल में 11वाँ साहित्यिक आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें चार पुस्तकों के लोकार्पण के साथ 'आज का समय और कविता' पर बहुत ही सार्थक वक्तव्य प्रख्यात कवि आलोचक प्रो. कुमार कृष्ण द्वारा दिया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में आज के पूरे साहित्यिक परिदृष्य पर बात की। इस गरिमामय और भव्य आयोजन के लिए हिमालय मंच को बधाई दी। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री एस. आर. हरनोट ने प्रो. कुमार कृष्ण रचनाक्रम पर विस्तार से बात की और कहा कि यदि वर्ष 1985-86 के दौरान कुमार कृष्ण का आशीर्वाद न मिला होता, तो उनका कहानी के क्षेत्र में आना संभव न होता। आज के समय में बहुत कम लेखक हैं, जो दूसरे लेखक को प्रोत्साहित करते हैं। इस सत्र का संचालन हिमालय मंच अकादमी के सचिव डॉ. कर्म सिंह ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शंकर वासिष्ठ ने की तथा पद्मश्री ओमेश कुमार भारती मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके साथ जानी-मानी लेखिका डॉ. उषा बंदे और वरिष्ठ आलोचक डॉ. हेमराज कौशिक ने मंच साझा किया। पुस्तकों में डॉ. देविना अक्षयवर की

आलोचना पुस्तक 'आप्रवासी साहित्य और अभिमन्यु अनत', डॉ. अनिता शर्मा की पुस्तक 'क्योंथल-इतिहास, लोक जीवन एवं संस्कृति', युवा लेखक कवि बलवंत नीब का कविता-संग्रह 'एक स्पर्श एहसास भर' और वरिष्ठ लेखक जगदीश कश्यप की कविता पुस्तक 'डर लगने लगा है' का लोकार्पण किया गया। प्रमुख वक्ताओं में डॉ. हेमराज कौशिक, श्री गणेश गनी, डॉ. जगदीश बाली, डॉ. देवकन्या ठाकुर, श्री दिनेश कुमार, डॉ. देविना अक्षयवर शामिल रहे, जिन्होंने चारों पुस्तकों पर विस्तार से चर्चा की। इसके बाद हिमाचल के विभिन्न स्थानों से पधारे अतिथि कवि रचनाकारों, छात्रों और हिमालय मंच के सदस्यों ने कविता-पाठ किए।

साभार : असर न्यूज़.कॉम

सम्मान एवं पुरस्कार

साहित्य भूषण सम्मान समारोह

17 दिसंबर, 2022 को हंसराज कॉलिज, दिल्ली में मुंबई की हिंदी अकादमी द्वारा साहित्य भूषण सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें हल्द्वानी की साहित्यकार व लेखिका मीना अरोड़ा को 'साहित्य भूषण सम्मान' से विभूषित किया गया। इस समारोह में देश-विदेश के कई अन्य साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया, जिसमें इंग्लैंड से जया वर्मा, ऑस्ट्रेलिया से रेखा राजवंशी, अमेरिका से अनीता कपूर तथा दिल्ली से जय प्रकाश पांडे आदि को हिंदी अकादमी, मुंबई द्वारा सम्मानित किया गया। मीना अरोड़ा द्वारा लिखे गए मुख्य काव्य-संग्रहों में 'शेल्फ़ पर पड़ी किताब' व 'दुर्योधन' हैं और इनके उपन्यास 'एक ऐसी भी निर्भया' पर शोधार्थियों द्वारा मुंबई, बनारस तथा मद्रास विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य किया गया।

साभार : हिंदुस्तान समाचार.इन

श्री प्रशांत अवस्थी को 'विश्व हिंदी गौरव सम्मान'

10 दिसंबर, 2022 को नई दिल्ली के हिंदी भवन में हिंदी कल्चरल सेंटर टोक्यो द्वारा आयोजित समारोह में गगनांचल पत्रिका के संपादक डॉ. आशीष कंधवे, सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार पद्मश्री सुनील जोगी व हिंदी कल्चरल सेंटर टोक्यो की संस्थापिका रामा शर्मा के हाथों औरैया के युवा कवि एवं शिक्षक श्री प्रशांत अवस्थी को हिंदी के क्षेत्र में किए गए विभिन्न प्रयासों के लिए 'विश्व हिंदी गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में ऑस्ट्रिया, रूस, नार्वे व जापान के प्रवासी भारतीयों के साथ-साथ भारत के भी हिंदी सेवी उपस्थित रहे।

साभार : भास्कर.कॉम

साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2022

27 दिसंबर, 2022 को नई दिल्ली स्थित त्रिवेणी कला संगम में 'साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2022' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया और साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक के हाथों हिंदी के युवा लेखक श्री भगवंत अनमोल को उनके उपन्यास 'प्रमेय' के लिए 'साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। 'प्रमेय' विज्ञान और धर्म के बीच सत्ता संघर्ष दर्शाता है। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका ममता कालिया रहीं।

पुरस्कार-वितरण-समारोह में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष, श्री माधव कौशिक ने कहा कि *"आज के पुरस्कृत युवा लेखक एक नए भारतीय परिवेश का निर्माण कर रहे हैं, जिसमें भाषा की बाध्यता अब कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं रह गई है।"*

मुख्य अतिथि के रूप में लेखिका ममता कालिया ने कहा कि *"अब युवाओं के पास विचारों से लेकर अन्य सभी जानकारियों की उपलब्धता है। उनका लेखन आशा से भरा हुआ है।"* ममता कालिया ने युवा पीढ़ी को आगाह भी किया कि लिखने से पहले क्या नहीं लिखना है, उस पर विचार करना आवश्यक है। श्री भगवंत अनमोल के साथ-साथ साहित्य अकादमी ने कुल 24 भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को इस वर्ष युवा पुरस्कार से सम्मानित किया।

साभार : हिंदी न्यूज़ 18.कॉम

उद्भव सांस्कृतिक सम्मान समारोह-2022

9 दिसंबर, 2022 को नई दिल्ली स्थित प्रतिष्ठित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के मल्टीपरपज़ सभागार में उद्भव सांस्कृतिक सम्मान समारोह-2022 का भव्य आयोजन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय जन-संचार संस्थान के महानिदेशक, प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी थे, वहीं अध्यक्ष के रूप में, भारत में मंगोलिया के राजदूत, महामहिम श्री गनबोल दामजेव उपस्थित थे।

इस समारोह के अंतर्गत मूर्धन्य वरिष्ठ साहित्यकार, भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री तथा वर्तमान में सांसद लोकसभा डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' को 'उद्भव शिखर सम्मान' से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. पोखरियाल ने साहित्य और संस्कृति की सेवा को मिशन के रूप में लेने का आह्वान किया। उन्होंने काव्य-पाठ भी किया।

विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. आशीष कंधवे ने अपने उद्बोधन के माध्यम से डॉ. विवेक गौतम की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए कहा कि 'उद्भव' अपनी सांस्कृतिक और वैचारिक चेतना के कारण आज देश की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक संस्था के रूप में पहचानी जाती है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. अशोक पांडेय ने अपने उद्बोधन में जीवन की अनुभूत सच्चाइयों से उपजी

प्रेरणा की ओर संकेत किया। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.अरुण प्रकाश ढौंडियाल ने डॉ. निशंक को अपना नवीनतम काव्य-संग्रह भेंट करते हुए अपने संबोधन सांस्कृतिक सम्मान-समारोह के आयोजन हेतु बधाई दी एवं भविष्य में भी इस कार्यक्रम को जारी रखने के लिए शुभकामनाएँ दीं।

इस वर्ष समाजसेवी मोहन पारा, प्राचार्य प्रो. विपिन कुमार अग्रवाल, प्रो. सत्यकेतु सांकृत, इंद्रजीत शर्मा, शिक्षाविद् डॉ. राजेश्वरी कापड़ी, बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. हेमचंद्र भट्ट, अमित कुमार, लेखिका शोभना मित्तल, जीवन कौशल आदि को 'उद्भव सांस्कृतिक सम्मान' से विभूषित किया गया।

साभार : नित्य समय समाचार-पत्र

8वाँ वैश्विक साहित्य उत्सव

6, 7 और 8 अक्टूबर, 2022 को नोएडा स्थित मारवाह स्टूडियोज़ के विभिन्न सभागारों में '8वें वैश्विक साहित्य उत्सव' के भव्य आयोजन में देश के लोकप्रिय और प्रमुख साहित्यकारों को सबसे प्रतिष्ठित 'सूरज प्रकाश मारवाह साहित्य रतन पुरस्कार' प्रदान किए गए।

इस अवसर पर कवयित्री सविता चड्ढा ने जीवन में रिश्तों के मूल्यों के बारे में बात की। सभा को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. दिविक रमेश ने कहा कि छात्र शिक्षक के जीवन का एक अभिन्न अंग है और छात्रों के बिना शिक्षक कुछ भी नहीं है। वरिष्ठ राजनेता आनंद साहू ने भाषा के महत्त्व पर बल दिया। इस अवसर पर नौ प्रसिद्ध लेखकों / कवियों को 'सूरज प्रकाश मारवाह साहित्य रतन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुशील भारती ने किया।

साभार : लिंक्ड इन

40वाँ स्थापना दिवस, सम्मान समारोह व कवि सम्मेलन

04 नवंबर, 2022 को सेवा संस्थान, पुष्पांजलि सभागार, रानीगंज, कानपुर में 40वाँ स्थापना दिवस, सम्मान-समारोह व कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विख्यात ज्योतिषविद् डॉ. ए के दुबे पद्मेश ने किया तथा विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्यामसुंदर निगम थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन एवं सरस्वती-वंदना से हुआ। इस अवसर पर साहित्य एवं संस्कृति की संस्था मानस मंच के द्वारा वर्ष 2022 'पंडित फूलचंद शर्मा स्मृति सम्मान' कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कानपुर के लोकसभा सांसद श्री सत्यदेव पचौरी के करकमलों द्वारा डॉ. आशीष कंधवे को प्रदान किया गया। साथ ही देश के 6 लोगों को अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने के लिए सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया । इस अवसर पर काव्य-पाठ करने वाले सभी विशिष्ट कवियों का भी अभिनंदन किया गया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय सम्मान समारोह, विचार-गोष्ठी एवं लोकार्पण समारोह

25 दिसंबर 2022 को कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली में पंडित मदन मोहन मालवीय की जयंती के अवसर पर 'केवल सच' पत्रिका द्वारा आयोजित भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय सम्मान समारोह, विचार-गोष्ठी एवं 'केवल सच' पत्रिका का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ। राज्यसभा सांसद श्री सुधांशु त्रिवेदी मुख्य अतिथि के रूप में तथा दिल्ली के पूर्व मंत्री, श्री कपिल मिश्रा, भाजपा नेता, श्री संजय मयूख, बिहार के उद्योग मंत्री, श्री समीर कुमार महासेठ, भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक, श्री संजय द्विवेदी तथा डॉ. आशीष कंधवे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

श्री सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि जहाँ मदन मोहन मालवीय ने भारतीय परंपरा और भारतीय ज्ञान संपदा के संरक्षण के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया। श्री समीर कुमार महासेठ ने पंडित मदन मोहन मालवीय के राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया पर और श्री संजय द्विवेदी ने मदन मोहन मालवीय के लेखन-कार्य पर प्रकाश डाला । डॉ. आशीष कंधवे ने कहा कि पंडित मदन मोहन मालवीय सामाजिक सुधार के अनेक कार्य करते रहे। इस अवसर पर, सुप्रसिद्ध लोगों को पंडित मदन मोहन मालवीय सम्मान से सम्मानित किया गया, जिनमें हंसराज कॉलिज के डॉ. विजय मिश्र प्रमुख थे।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्रीमती दीप्ति शर्मा 'दीप' भाषा सारथी सम्मान से सम्मानित

28 दिसंबर, 2022 को इन्दौर में हिंदी भाषा के विस्तार के लिए कार्य करने वाले मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा उड़ीसा के साहित्यकार श्रीमती दीप्ती शर्मा 'दीप' को भाषा सारथी सम्मान से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरेराम बाजपेयी ने की। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष, डॉ. अर्पण जैन 'अविचल', वरिष्ठ पत्रकार मुकेश तिवारी, कवि गौरव साक्षी एवं नीलम हरीश तोलानी द्वारा सम्मान दिया गया। श्रीमती शर्मा वर्षों से अहिंदी प्रदेश उड़ीसा में साहित्य-सेवा में संलग्न हैं, काव्यांचल समूह के माध्यम से दोहा इत्यादि लेखन सिखाने में भी सक्रिय हैं। उनके हिंदी के प्रति अनुराग के अवदान को रेखांकित करते हुए मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा उन्हें भाषा सारथी सम्मान दिया गया है। इस अवसर पर डॉ. पूजा मिश्रा, श्री दीपक विभाकर नाईक, वाणी जोशी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : हिंदी मीडिया.इन

डॉ. पवन सिंह को 'हिंदी सेवा सम्मान'

8 नवंबर, 2022 को भारत के प्रमुख हिंदी समाचार पोर्टल प्रभासाक्षी की 21वीं वर्षगाँठ के अवसर पर लेखक एवं मीडिया प्राध्यापक डॉ. पवन सिंह को 'हिंदी सेवा सम्मान-2022' से सम्मानित किया गया। प्रभासाक्षी की ओर से प्रतिवर्ष यह सम्मान दिया जाता है। डॉ. पवन सिंह वर्तमान में जे. सी. बोस विश्वविद्यालय, फरीदाबाद के पत्रकारिता विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष हैं। वे निरंतर पत्रकारिता, सामाजिक एवं समसामयिक विषयों पर हिंदी में लेखन के माध्यम से सक्रिय रहते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर एवं कुलसचिव डॉ. सुनील गर्ग ने इस सम्मान पर हर्ष व्यक्त किया और डॉ. पवन सिंह को शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। प्रो. तोमर ने बताया कि डॉ. पवन सिंह समसामयिक विषयों पर हिंदी में नियमित लेखन कर रहे हैं। आज समसामयिक विषयों पर हिंदी में सत्य व तथ्यपरक लेखन की आवश्यकता है।

साभार : मीडिया मोरचा.कॉम

श्रद्धांजलि

डॉ. मैनेजर पाण्डेय

6 नवंबर, 2022 को हिंदी में मार्क्सवादी आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक श्री मैनेजर पाण्डेय का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 23, सितंबर 1941 को बिहार प्रान्त के वर्तमान गोपालगंज जनपद के 'लोहटी' गाँव में हुआ था। आपकी आरम्भिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई, जहाँ से आपने एम.ए. और पी.एच.डी की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आप जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भाषा संस्थान के भारतीय भाषा केंद्र में हिंदी के प्रोफ़ेसर रहे हैं। साथ ही, आप जे.एन.यू. में भारतीय भाषा केंद्र के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इसके पूर्व आप बरेली कॉलिज, बरेली और जोधपुर विश्वविद्यालय में भी प्राध्यापक रह चुके हैं। डॉ. मैनेजर पाण्डेय की साहित्यिक समीक्षा जगत में अपनी एक अलग पहचान है। डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने समकालीन साहित्य के साथ भक्तिकाल और रीतिकाल के साहित्य पर सर्वथा नवीन दृष्टि से विचार किया है।

आपने 'शब्द और कर्म', 'साहित्य और इतिहास-दृष्टि', 'भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य', 'सूरदास', 'साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका', 'आलोचना की सामाजिकता', 'उपन्यास और लोकतंत्र', 'हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान', 'आलोचना में सहमति-असहमति', 'भारतीय समाज में प्रतिरोध की परम्परा', 'साहित्य और दलित दृष्टि', 'शब्द और साधना', 'संकट के बावजूद', 'अनभै साँचा', 'मैनेजर पांडेय : संकलित निबन्ध', 'मेरे साक्षात्कार', 'मैं भी मुँह में जुबान रखता हूँ', 'बतकही', 'मुक्ति की पुकार', 'सीवान की कविता', 'पराधीनों की विजय यात्रा' तथा 'आचार्य द्विवेदी की स्मृति में' आदि का सृजन किया।

आपको हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'शलाका सम्मान', 'राष्ट्रीय दिनकर सम्मान', रामचन्द्र शुक्ल शोध संस्थान, वाराणसी का 'गोकुल चन्द्र शुक्ल पुरस्कार' तथा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का 'सुब्रह्मण्य भारती सम्मान' प्राप्त हैं।

साभार : विकीपीडिया

श्री शेखर जोशी

4 अक्टूबर, 2022 को उपन्यासकार एवं कवि श्री शेखर जोशी का 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 10 सितम्बर, 1932 को ओलिया गाँव, अल्मोड़ा, भारत में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर और देहरादून में हुई थी। माध्यमिक की पढ़ाई के दौरान ही सुरक्षा विभाग में आपका ई.एम.ई. अप्रेन्टिसशिप के लिए चयन हो गया, जहाँ आप वर्ष 1986 तक सेवा में रहे, तत्पश्चात् स्वैच्छिक रूप से पदत्याग करके आप स्वतंत्र लेखन में संलग्न हो गए।

आपकी रचनाओं में 'दाज्यू', 'कोशी का घटवार', 'बदबू', 'मेंटल', 'साथ के लोग', 'हलवाहा', 'नौरंगी बीमार है', 'मेरा पहाड़', 'डागरी वाला', 'बच्चे का सपना', 'आदमी का डर' तथा 'एक पेड़ की याद' सम्मिलित हैं। आपको साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए 1987 में 'महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' तथा 1995 में 'साहित्य भूषण' प्राप्त हुआ। हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार ने आपको 'श्रीलाल शुक्ल सम्मान' से अलंकृत किया।

साभार : ए.बी.पी. लाइव.कॉम

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

सूचना

आ रहा है लेखक कोश : आमंत्रण

यदि आप हिंदी के (प्रकाशित, सुपरिचित, या महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले) लेखक, आलोचक, समीक्षक, पत्रकार, शिक्षाविद्, शोधकर्ता, विद्वान, डोमेन विशेषज्ञ, कोशकार, नाटककार, कवि, गीतकार, व्यंग्यकार, पटकथाकार, उपन्यासकार, स्तंभकार, अनुवादक, ब्लॉगर, व्लॉगर, यूट्यूबर, व्यंग्यचित्रकार या हिंदी से जुड़े अन्य सृजनधर्मी हैं तो सादर आमंत्रित हैं।

www.facebook.com/groups/lekhakkosh/

साभार : श्री बालेंदु शर्मा दाधीच का फ़ेसबुक पृष्ठ

संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
संपादकीय सहयोग : डॉ. सोमदत्त काशीनाथ
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर : @WHSMauritius
इंस्टाग्राम : WHS_08

Newsletter WHS Dec 2022 v 04 April 2025.indd 15 04/04/2025 19:07:47

संपादकीय

भारत में अहिंदी भाषियों और विदेशियों द्वारा हिंदी का प्रचार

भारत एक बहुभाषी देश है, जिसमें 1600 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। यद्यपि हर क्षेत्र की अपनी भाषा है, तथापि बहुत बड़ी संख्या में भारतीय दो या दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। समृद्ध भाषाई परिवेश में भारत की राजभाषा हिंदी सर्वाधिक प्रयुक्त होने के कारण 'संपर्क भाषा' या 'संवाद भाषा' या 'आपसी समझ की भाषा' के रूप में भारत की समन्वयवादी संस्कृति और एकता की प्रतीक बन गई है। भौगोलिक दृष्टि से विशाल भारत के विभिन्न राज्यों को एक सूत्र में पिरोने की शक्ति रखने के कारण हिंदी देश के उत्तर प्रांत से लेकर दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में भी नित्य प्रसारित होती रही है। आधुनिक युग में, अनेक अहिंदी भाषियों और विदेशियों ने भी भारत में हिंदी के प्रचार में उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है।

महर्षि दयानंद की मातृभाषा गुजराती थी और वे संस्कृत के विद्वान् थे। उन्होंने देखा कि भारत के अधिकांश लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। अत: हिंदी को सहर्ष अपनाकर उन्होंने इसी भाषा में भाषण देना आरंभ किया। अपने कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना उन्होंने हिंदी में की। इस पुस्तक का अनुवाद दूसरी भाषाओं में करने की माँग हुई, तो महर्षि दयानंद ने अनुवाद के लिए स्वीकृति नहीं दी। उनके अनुसार -

"हिंदी भाषा सरल होने से थोड़े ही दिनों में सीखी जा सकती है? जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर यहाँ की भाषा हिंदी को सीखने में परिश्रम नहीं करता, उससे और क्या आशा की जा सकती है? जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी, वे इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे। दयानंद के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का प्रचार होगा।"

हिंदी के प्रति एक हिंदीतर भाषी का यह उद्गार प्रेरणाप्रद रहा। यही कारण है कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने के लिए असंख्य लोगों ने हिंदी सीखी।

महात्मा गांधी भी गुजराती भाषी होने के बावजूद हिंदी के प्रबल समर्थक थे। सन् 1909 में उन्होंने घोषणा की -

"सारे हिंदुस्तान को जो भाषा चाहिए, वह तो हिंदी ही होनी चाहिए।"

सन् 1918 में आयोजित 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अधिवेशन में उन्होंने कहा -

"मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें।"

महात्मा गांधी के प्रभाव से दक्षिण भारत के विद्वानों ने हिंदी का विपुल प्रचार किया। मद्रास नगर में सन् 1918 में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की स्थापना की गई। इस सभा ने केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु में हिंदी पढ़ाने की योजना का कार्यान्वयन किया। जिनकी भाषा तमिल या तेलुगू या कन्नड़ या मलयालम थी, वे भी इस सभा से जुड़कर हिंदी का प्रचार करने लगे थे। इस दृष्टि से डॉ. सी. पी. रामास्वामी अय्यर, श्री पी. वी. नरसिंह राव, डॉ. बासप्पा दानप्पा जत्ती, टी. आर. वेंकटरमण, श्री वेंकटेश नारायण, डॉ. न्यायमूर्ति वी. एस. मालीमथ आदि नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। अपने लेख 'दक्षिण भारत की भाषाई चेतना और हिंदी भाषा' में प्रो. दिलीप सिंह लिखते हैं -

"अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिंदी की केंद्रीय भूमिका को स्वीकारने, आदान-प्रदान की प्रमुख भाषा मानकर उसे अपनाने तथा हिंदी में मौलिक सृजन और अनुवाद करके उसे भारतीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने में दक्षिण भारत के चारों प्रांतों के अनेक हिंदी प्रेमियों का योगदान अप्रतिम है।"

भारत के अन्य क्षेत्रों में भी हिंदीतर भाषियों ने हिंदी का अलख जगाया। पंजाब में लाला लाजपतराय ने वैदिक विद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई को महत्त्व दिया। महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक ने अपनी पत्रिका 'केसरी' और 'मराठा' में हिंदी को स्थान दिया। पूणे में मराठी भाषी बाबा राघवदास ने मौनीबाबा नामक संत से हिंदी सीखकर हिंदी का प्रचार करने के लिए बरहज आश्रम में राष्ट्रभाषा विद्यालय की स्थापना की। असम में स्व. श्यामनाथ शर्मा ने हिंदी शिक्षण और साहित्य-विमर्श की व्यवस्था की। बांग्लाभाषी सुभाषचंद्र बोस 'आज़ाद हिंद फ़ौज' की स्थापना करने के बाद अपने सभी वक्तव्यों को हिंदी में ही प्रस्तुत करने लगे थे। उनका विचार था -

"जिस देश की अपनी राष्ट्रभाषा नहीं होती, वह खड़ा नहीं हो सकता।"

भारत के कोने-कोने में गैर हिंदी भाषी पत्रकारों, साहित्यकारों, विचारकों, राष्ट्रभक्तों, स्वतंत्रता के सेनानियों, संस्कृति के प्रचारकों, बॉलीवुड के अभिनेताओं आदि ने हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने और उसे जनता की भावनाओं की भाषा बनाने में सहयोग किया। हिंदी के प्रचार में इन हिंदीतर भाषियों के योगदान के संबंध में डॉ. विनोद कुमार सिन्हा लिखते हैं -

"हिंदी की गरिमा को अहिंदी भाषियों ने बराबर स्वीकार किया और उसका गुणगान किया।"

भारत में बसे विदेशियों ने भी हिंदी के प्रचार में हाथ बताया। विशेषकर 18वीं से 20वीं शताब्दी के अंतर्गत इंग्लैंड, फ्रांस, आयरलैंड, बेल्जियम, पुर्तगाल, रूस, जापान आदि से आने वाले विद्वानों ने हिंदी की सुंदरता पहचानकर आनन-फ़ानन में इसे सीखकर देश के निवासियों के साथ हिंदी में ही संवाद स्थापित किया। कुछ विदेशी हिंदी के माध्यम से भारतीयों के बीच इतना घुल-मिल गए कि उन्होंने भारत-भूमि को ही अपनी कर्म-भूमि बनाने का विचार किया। इंग्लैंड में जन्मी एनी बेसेंट जब भारत में रहने लगीं, तब उन्होंने स्वयं को विदेशी नहीं समझा। भारतीय संस्कृति और भारत की प्रचलित भाषा हिंदी से उन्हें गहरा लगाव हुआ। वे कहा करती थीं -

"ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि मेरा अगला जन्म हिन्दू परिवार में हो।"

मद्रास में हिंदी प्रचार आंदोलन का उद्घाटन करके एनी बेसेंट ने हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

सन् 1935 में ईसाई पादरी फ़ादर कामिल बुल्के का भारत में आगमन हुआ। यहाँ पहुँचकर उन्होंने हिंदी सीखी और उनका मन इस भाषा में रम गया। एक जुटाव में भाषण देते हुए फ़ादर कामिल बुल्के ने कहा - "हिंदी मेरी भाषा है।"

श्रोताओं में से एक व्यक्ति ने उनसे प्रश्न किया -

"आप बेल्जियम से आए हुए पादरी हैं और आपकी भाषा डच है। फिर आप ऐसा क्यों कहते हैं कि हिंदी आपकी भाषा है?"

फ़ादर कामिल बुल्के ने उत्तर दिया -

"यह सच है कि मेरा देश और मेरी भाषा अलग हैं। परंतु इससे भी बड़ा सच यह है कि हिंदी से मुझे बेहद प्यार है और मेरी समझ में बस इतनी ही आती है कि दुनिया की किसी भाषा को जानने और समझने के बाद यदि आप उसे सच्चे मन से चाहने लगते हैं, तो वह आपकी अपनी भाषा बन जाती है।"

विदेशी मूल के विद्वानों की उदारता के कारण भारत में हिंदी का गौरव बढ़ा। आयरलैंड के जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन डब्लिन ने हिंदी भाषा सीखने के बाद इसके सहारे भारत की कई भाषाओं और बोलियों का सर्वेक्षण किया। इटली के कैसियानों बेलिगटी ने भारत में कार्य करते हुए हिंदी व्याकरण की पुस्तक लिखकर हिंदी की वर्णमाला की सरल व्याख्या की। फ़ोर्ट विलियाम कॉलिज में हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष बनने के बाद एडिनबरा के जॉन बार्थविक गिलक्राइस्ट ने हिंदी भाषा को हिन्दुस्तानी का मूल आधार मानकर उसे सीखने का प्रोत्साहन दिया। जापानी विद्वान् अकियों हागा ने महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में हिंदी का प्राध्यापन किया। विदेशी विद्वानों की प्रेरणा से भारत के अनेक निवासियों में हिंदी पढ़ने की ललक जगी।

भारत में हिंदीतर भाषियों या भारत में बसने वाले विदेशियों ने हिंदी को देश की धड़कन मानते हुए उससे प्रेम का नाता जोड़ा, उसे तन-मन से अंगीकार किया और उसका उत्थान किया। राष्ट्रीय संपर्क की भाषा हिंदी के प्रति उनकी उदारता और सद्भावना से प्रेरणा लेकर हमें भारत के हर भाग में हिंदी का दीप जलाए रखना है। भारतीयों और विदेशियों के मिले-जुले प्रयासों से हिंदी भारत के विशालतम समूह की भाषा बनकर संबंधों को प्रगाढ़ करती रहेगी और भारत की अखंडता को सुरक्षित रखेगी।

डॉ. माधुरी रामधारी
महासचिव

Newsletter WHS Dec 2022 v 04 April 2025.indd 16 04/04/2025 19:07:47